P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-IV* December-2015

हिन्दी उपन्यासों में प्रयोग के विविध आयाम

पिन्टू रावल
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
महर्षि दयानंद वि"वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा

सारांश

हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा उपन्यास में विभिन्न प्रयोग हुए हैं। जैसे कथागत, f"ाल्पगत, आंचलिकतागत, समयगत, सहयोगी लेखनगत, चरित्रगत प्रयोग आदि। कथागत प्रयोग के प्रमुख रचनाकार, अज्ञेय, जैनेंद्र, इलाचंद्र जो"ाी जी रहे हैं। f"ाल्पगत प्रयोग में धर्मवीर भारती कृत 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' तथा f"ाव प्रसाद रूद्र का 'बहती गंगा' महत्त्वपूर्ण उपन्यास रहे हैं। आंचलिकतागत प्रयोग में 'रेणु' जी का 'मैला आँचल', 'परती परिकथा' वृंदावनलाल वर्मा का 'मृगनयनी', 'अमरबेल' आदि उपन्यासों में ग्रामीण संस्कृति खेत–खलिहानो का वर्णन किया गया हैं। समयगत प्रयोग में गिरिधर गोपाल का 'चांदनी रात के खंडहर' नरे"ा मेहता का 'डूबते मस्तूल' व सर्वे"वरदयाल सक्सेना का सिनेरिया टेकनीक में लिखा गया उपन्यास 'सोया हुआ जल' इस प्रयोग में सफल रहे हैं। सहयोगी लेखनगत प्रयोग में 'एक इंच मुस्कान' राजेंद्र यादव और मन्नू भंड़ारी द्वारा लिखा गया सफल उपन्यास हैं तथा दस लेखको द्वारा लिखा गया 'ग्यारह सपनों का दे"ा' हिन्दी साहित्य में नया प्रयोग है। चरित्रगत प्रयोग में निर्मल वर्मा का 'वे दिन' राजेंद्र यादव का '"ाह और मात' मोहन राके"ा का 'अंधेरे बंद कमरे' और अज्ञेय का 'अपने–अपने अजनबी' भी पात्रों के चरित्र की दृष्टि से प्रयोगात्मक हैं। अतः इन सब प्रयोगा से हिन्दी उपन्यास को नही पहचान मिली है।

मुख्य शब्द : उपन्यास, प्रयोग, कथागत, f"ाल्पगत, आंचलिकतागत, समयगत, सहयोगी लेखनगत, चरित्रगत।

प्रस्तावना

हिन्दी उपन्यासों में विभिन्न प्रकार के प्रयोग हुए है– ''हिन्दी के 'उपन्यास' शब्द को यदि खोलकर देखा जाए तो यह 'उप'+'न्यास' शब्दो से मिलकर निर्मित होता है। इन शब्दो के क्रम"ाः अर्थ है 'निकट' और 'रखा हुआ'। इस व्युत्पत्ति से पता चलता है कि उपन्यास एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन को न केवल व्यापकता में बल्कि निकट से देखने का अवसर प्राप्त होता है।''[1]

उपन्यासों के प्रयोग क सम्बन्ध में डॉ0 दंगल झाल्टे कहते है–''एक तरह से नए उपन्यासकार उपन्यास विधा के सर्वथा एक नए अध्याय का ही निर्माण कर रहे हैं। परंतु उपन्यास क्षेत्र में हो रहे इन द्रुतगामी परिवर्तनों के बावजूद शुतुमुर्गी समीक्षक उसे परंपरागत विभाजनवादी मंचो से ही टेर रहे है।''[2]

अतः हम प्रयोगधर्मी उपन्यासों का प्रवित्तिमूलक विभाजन कर उसकी वि"ोषताओं का मूल्यांकन करते है।

कथागत प्रयोग

आज उपन्यासों में जिन घटनाओं का वर्णन हमें मिलता है, वे अब बहिर्जगत की वस्तु नही रह गई है। वे अब अंतर्जगत की वस्तु बन गई है। इन घटनाओं का काइ कार्यक्रम नहीं होता है और न ही इनकी कोई रूपरेखा ही नि"चत होती है। काल के संबंध में धारणा अब बदल गई है प्रेमचंद के बाद जो नई धारा हिन्दी में उभरती है उसमें स्वाधीनता आंदोलन और सामंती परिवे"ा के बीच की समस्याओं, बाह्यघटनाओं, परिस्थितियों, संस्कारों में फसे मनुष्य की विव"ाता द"ार्ना कम तथा व्यक्तिमन, उसकी कुंठाओं को दिखाना अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

'' 'परख' में जैनेंद्र भारतीय समाज में एक युवती के वैधव्य को केंद्र में रखकर उसके जीवन में घटित द्वन्द्वों और तनावों को अंकित करते है।''[3]

स्वाधीनता आंदोलन के दौर में राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से निरंतर सचेत होते जा रहे भारतीय समाज के बीच नए उभरते संसार को जैनेंद्र अपने उपन्यासों का विषय बनाते हैं। इनके उपन्यास एक ओर यथार्थवादी उपन्यास धारा को चुनौती देते है तो दूसरी ओर रूढ़ नैतिकताओं वाले खोखले समाज के आद"ार्ो का मजाक उड़ाते है।

अक्सर इनके उपन्यासों में त्रिकोणीय प्रेम विघमान रहता है। ऐसी स्थिति में उनके पात्रों मे संघर्ष होना चाहिए था, पर जैनेंद्र संघर्ष न करके

समन्वय का रास्ता अपनाते है। चाहे 'परख', 'त्यागपत्र', या 'सुनीता' हों या परवर्ती उपन्यास 'विवर्त', 'सुखदा' और 'व्यतीत'।

इन उपन्यासों की नायिकाएँ अपने प्रेम के प्रति आ"वस्त नहीं हो पाती हैं। सदियों से चली आ रही रूढ़ नैतिकताओं के जाल में जकड़ी अपने पति और प्रेमी के प्रति आकृष्ट होना चाहकर भी सामान्य नहीं हो पाती। जैनेंद्र स्त्री–पुरूष संबंधों में प्रेम या यौन भावनाओं की कुंठाओं को लेकर अपने उपन्यासों का वस्तु संसार निर्मित करते है।

इलाचंद्र जो"ी ने भी अपने प्रारंभिक उपन्यासों में इन्होंने व्यक्तिमन की समस्याओं का चित्रण किया है। जो"ी जी मानते है कि व्यक्ति के जीवन में घटित छोटी से छोटी घटना के पीछे उसकी मानसिकता में चल रही उधेड़बुन होती है।

'मुक्तिपंथ', 'जहाज का पंछी', 'प्रेत और छाया', 'सुबह के भूले', 'जिप्सी भूत का भविष्य' आदि उपन्यासों मे जो"ी जी की उपन्यास कला में एक स्वस्थ मोड़ आता दिखाई देता हैं। यहाँ से वे मनोविज्ञान को समाजिक उद्दे"य के लिए प्रयोग करना शुरू करते हैं। 'जहाज का पंछी' उपन्यास के माध्यम् से कथाकर ने उसे विविध परिस्थितियों मे डालकर बाहरी सभ्य जीवन की बनावटी दुनिया को उजागर करने का प्रयास किया है। स्वतांत्र्योत्तर युग के आत्मकेंद्रित होते चले जा रहे व्यक्ति के ढोंग पर वे प्रहार करते हैं। साथ ही दिखाते हैं कि ऊपर से स्वस्थ और नि"चंत दिखने वाला व्यक्ति भीतर से कितना पीड़ित और बेचैन है। अतः इलाचंद्र जो"ी ने परंपरा से हटते हुए हिन्दी उपन्यास को एक नई दि"ाा प्रदान की है।

अज्ञेय हिन्दी उपन्यासों की धारा को एक नया मोड़ देते है। '"ेखरः एक जीवनी' उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध आत्मकथात्मक उपन्यास है। उसे उत्तम पुरूष में लिखा गया है। इसमें बालक शेखर से युवक शेखर की कथा का विकास है। शेखर चिंतन"ील, अन्तर्मुखी, जिज्ञासु बालक है। वह जन्म, मृत्यु, ई"वर आदि के बारे में प्र"न करता है, जिसका उसे समुचित उत्तर नहीं मिलता है। अतः उसे अपनी अनेक जिज्ञासाओं और वृत्तियों को दबाना पड़ता है। वस्तुतः '"ेखर एक जीवनी' हिन्दी का ऐसा प्रयोग परक उपन्यास है जिसमें व्यक्ति के मानस की बड़ी गहराई और सुक्ष्मता के साथ जांच–पड़ताल की गई है। इस संबंध में ब्रजे"ा कुमार श्रीवास्तव का कथन है– ''"ेखर में मनोवि"लेषणात्मक द"ान का प्रयोग ही नहीं किया गया है, बल्कि 'प्रयोग' में 'उपयोग' लक्षित होता है और इस दृष्टि से अज्ञेय की 'एप्रोच' नि"चत ही सराहनीय है। वह शेखर से भाषणबाजी, बहसबाजी कराने के बावजूद खुद उसको 'द"ान' नहीं बनने देते हैं, जैसा कि जैनेंद्र और जो"ी अपने पात्रों को 'द"ान' बना डालते है।''[4]

अज्ञेय के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की केंद्रीय भूमिका में व्यक्तित्व का प्रबल दावेदार 'अहं' किसी न किसी रूप में देखने का मिलता है। उनके अन्य दो उपन्यास 'अपने–अपने अजनबी' और 'नदी के द्वीप' में भी प्रेम सम्बंधी सूक्ष्म संवेदनाएँ देखने को मिलती है। '"ेखरः एक जीवनी' में जितनी घटनाओं का संयोजन है, वे बाह्यतः एक चित्र के रूप में दिखती हुई भी अपनी मूल प्रकृति में आतंरिक है। शेखर की मानसिक स्थिति में व्युत्पन्न जब तक कथा पारिवारिक परिवे"ा में रहती है तब तक कोई स्थूल घटना नहीं घटती है। फिर भी कथा में कहीं भी ठहराव नहीं है, क्योंकि शेखर की वि"ाष्ट मानसिक संवेदनाएँ किसी न किसी घटना को जन्म देती है।

साठोत्तरी नए उपन्यासकार तो इससे भी आगे निकल गए और वे यौन समस्याओं, कुंठाओं तथा ग्रंथियों को केंद्र में रखकर उपन्यासों में रूपायित करने लगे हैं। इसके साथ कार्ल मार्क्स के 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद' एवं सार्त्र की अस्तित्ववादी चिंतन प्रणाली ने भी हिन्दी उपन्यासों में अपना महत्त्वपूर्ण पभाव दिखाया है। नए हिन्दी उपन्यासों की एक और स"ाक्त नई दि"ाा आंचलिकता के रूप में उभरकर सामने आती है। आंचलिकता को उपन्यासों में

नया प्रयोग मानते हुए डॉ0 कमल चौरसिया ने लिखा है– ''आचंलिकता उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर काल में एक नव्यतम विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आंचलिक प्रवृति की उद्भावना प्रेमचंद के पूर्व ही हो चुकी थी, परंतु इसका समुचित विकास प्रेमचंदोत्तर युग, वि"ाष रूप से स्वातंत्र्योत्तर युग में ही हुआ। आजादी के बाद 'रेणु' और नागार्जुन के उपन्यासों के माध्यम से यह साहित्य जगत में पल्वित और पुष्पित होने वाली एक सर्वथा नवीन एवं जनप्रिय धारा साबित हुई।''[5]

नगरों एवं महानगरों के शोर–गुल, यांत्रिक जीवन की असहनीयता और भौतिकता की अत्याधिक भरमार से ऊबे हुए लोग आंतरिक शांति के लिए स्वाभाविक ही प्रकृति के छवि–अंचल की ओर आकर्षित हुए है। मनुष्य के इस मनःस्थिति की डोर को फणी"वरनाथ रेणु, नागार्जुन, "ावप्रसाद सिंह, हिमां"ाु जो"ी, रामदर"ा मिश्र एवं उदय"ांकर भट्ट जैसे उपन्यासकरों ने पकड़ा और प"चमी एवं भौतिकता के आवर्तों में उलझे हिंदी उपन्यासों को साधारण ग्रामीण लोगों के बीच लाकर खड़ा कर दिया।

इस प्रकार नया उपन्यास कम समय में ही जीवन की विविध समस्याओं, मानव–मन की अनेक भंगिमाओं, परिवे"ा तथा आधुनिक भावबोध को प्रस्तुत करने में समर्थ हो गया। अब नया हिंदी उपन्यास अपने पूर्ववर्ती परम्परागत मान्यताओं मूल्यों तथा जीवनगत समस्याओं के साथ बहुत आगे बढ़ गया है।

इन वि"ाष्ट कल्पना को लेकर भी नए उपन्यासों का सृजन हो रहा है। ऐसे उपन्यासों में राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' वीरेंद्र कुमार जैन कृत 'अनुत्तर योगी' गिरी"ा अस्थाना कृत 'धूपछाही रंग' एवं मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' आदि महत्त्वपूर्ण उपन्यास है।

शिल्पगत प्रयाग

आज मानव के जीवन का अध्ययन उपन्यासकार विभिन्न रूपों में प्रस्तुत कर रहे है। मानव व्यक्तिव के संघटनात्मक और निर्माणात्मक तत्वों को विभिन्न कोणों से तथा विभिन्न रूपों में चित्रित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। यथार्थ जीवन को प्रस्तुत करते हुए उपन्यासकार आज तटस्थ रहने का प्रयत्न कर रहा है, इसीलिए कथा कहने की विभिन्न पद्धतियाँ नजर आने लगी है। यह नया "ाल्प

रूपात्मक और अभिव्यंजनात्मक है। बहिजीवन के साथ–साथ आभ्यंतरिक जीवन को अभिव्यक्त करने के लिए सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता, स्मृत्यालोक आदि रूपों का प्रयोग हिन्दी उपन्यासों में किया जा रहा है।

हिन्दी उपन्यासों में ि"ाल्प का महत्त्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि उपन्यास में जीवंतता, सजींदगी और सौंदर्य चेतना लाने का महत्वकांक्षी कार्य ि"ाल्प के द्वारा ही पूरा होता है। हिन्दी के शुरूआती उपन्यासों में परीक्षा गुरू का नाम लिया जाता है। इससे प्रेमचन्द के 'गोदान' और उसके उपरान्त ही उपन्यासों में ि"ाल्पगत नए–नए प्रयोग किए गए हैं। उपन्यास में ि"ाल्प के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए डॉ0 त्रिभुवन सिंह का कथन है– ''दैनिक जीवन में काम आने वाली कल्पना "ाक्ति को उद्बुद्ध करने, पूर्णता का ज्ञान प्राप्त करने, उपन्यासकारों द्वारा प्रस्तुत चरित्रों और दृ"यों को मस्तिष्क में धारण करने, उन्हें आयाम देने और चरित्रों, को पूर्णता प्रदान करने का जो कार्य पुस्तकों द्वारा होता है उसके मूल में ि"ाल्प ही है।''[6]

उपन्यास की इस परंपरा में क्रांतिकारी परिवर्तन प्रस्तुत करने वाला नया प्रयोग अज्ञेय का '"ोखरःएक जीवनी' उपन्यास है। यह सारा उपन्यास स्मृत्यालोक पद्धति से लिखा गया है। मृत्यु की छाया में बैठकर शेखर का चेतन प्रवाह अतीत के जीवन के विविध मानस चित्रा को स्मृतियों के रूप में देखता है। शेखर की इस मनःस्थिति को व्यक्त करने के लिए स्मृत्यालोक की पद्धति को अपनाना अनिवार्य था। '"ोखरः एक जीवनी' की टेक्नीक का रहस्य है फाँसी, मृत्यु अथवा मृत्यु की अनिवार्यता का बोध। स्मृति पटल पर आए हुए इन चित्रों में घटनाओं एवं द"यों का क्रम नही, मनः स्थितियों और भावों का क्रम मिलता है।

धर्मवीर भारती का 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' कहानियों की पद्धति में लिखा गया एक नया उपन्यास हैं। इसमें सात कहानियाँ है जो प्राचीन पद्धति से कही गई हैं। किन्तु इसमें नया यह है कि इस अनेकता में भी एकता रहती है। अलग–अलग कहानियों में अलग–अलग पात्रों की कथाएँ होने पर भी वे पात्र एक दूसरे से संबंध दिखलाएं गए हैं। इन कहानियों में एक सूत्रता स्थापित करने का कार्य, इन कहानियों को कहने वाला पात्र माणिकमुल्ला करता है। ''निम्न मध्यवर्ग की हता"ाा, आर्थिक संघर्ष नैतिक विचलन और अनाचार ही इन कहानियों का वास्तविक कथ्य है। समाज की इन्ही अनीतिपूर्ण स्थितियों से टकराकर सूरज के छः घोड़े और उनमें जुता उसका रथ टूट–फूट कर जर्जर हो चुका है। आ"ाा भविष्य के रूप में अब सिर्फ सातवें घोड़े से ही बची है–इसी तेजस्वी और बल"ाली घोड़े में निम्न–मध्य–वर्ग के सपने और आकांक्षाँए सुरक्षित है''[7]

'बहती गंगा' ि"ावप्रसाद रूद्र का एक नया प्रयोग है। इसमें बारह तरगें हैं। का"ाी के दो सौ वर्षों के आनंदमय जीवन का इतिहास इस उपन्यास में अवतरित किया गया है। आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ने इस ग्रंथ के परिचय में लिखा है–''बहती गंगा वि"वभर के उपन्यास जगत में एक नई शक्ति, एक नई आभा और एक नई कला लेकर अवतरित हुआ है। राजवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग के पात्र अपनी–अपनी कल्पना, भावना, प्रकृति और प्रवृति की स्वाभाविक भूमिका में ऐतिहासिक घटना प्रवाह में बहते चले आ रहे हैं, इन्हें उपन्यासकार छूता नहीं है, वरन क्रिकेट मैच का रेडियो पर विवरण देने वाले प्रवक्ता की भाँति आँखों पर दूरवीक्षण यंत्र लगाकर प्रत्येक पात्र की क्रिया का वर्णन सूक्ष्मता, सजीवता और भावुकता के साथ करता चला जाता है।''[8]

हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' भी हिन्दी उपन्यास में एक अभिनव प्रयोग है। यह कादम्बरी और हर्षचरित की प्राचीन शैली का नया संस्करण है, जो अपने आप में उस युग की भाव, शैली और विचारों को ही नहीं बल्कि अपने युग की संस्कृति और सभ्यता को भी प्रतिबिंबित करने वाला अनूठा प्रयोग है। इसमें इतिवृतात्मकता के सभी माध्यमों–भाषण शैली, आत्मालाप, कथोपकथन, अंतर्वि"लेषण आदि मनोद"ाओं का प्रयोग करके एक जीवंत जीवन भोग का मायावरण पैदा किया गया है। वस्तुतः यह आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई एक कलात्मक जीवनी है।

इस प्रकार ि"ाल्प की दृष्टि से कुछ अन्य प्रयोग भी हुए है। प्रभाकर माचवे का 'द्वाभा' उपन्यास कथा संगठन और शैली–ि"ाल्प प्रयोग की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस उपन्यास की संरचना अलग तरह की है, जिसमें स्कैच, डायरी, निबंध, कहानी यानी साहित्य के विभिन्न रूपों को लेखक ने एक साथ प्रयोग किया है। ये उपन्यास नए अनुभव संसार का उद्घाटन करने वाले तथा उपन्यास–संरचना की दृष्टि से प्रयोग"ाील माने जाते हैं।

आंचलिकतागत प्रयोग

आंचलिकता उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर काल में एक नई विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है, आंचलिक प्रवृत्ति की उद्भावना प्रेमचंद के पूर्व ही हो चुकी थी, परंतु इसका समुचित विकास वि"ोष रूप से स्वातंत्र्योत्तर युग में ही हुआ। कुछ समीक्षक ि"ावपूजन सहाय के उपन्यास 'देहाती–दुनिया' को प्रथम आंचलिक उपन्यास मानते हैं। ''फणी"वरनाथ रेणु के उपन्यास हो सही अर्थों में 'आंचलिक' हैं। सत्य तो यह है कि 'मैला आंचल' और 'परती परिकथा' में ग्रामांचलों के जितने वि"ाद और सवाक् चित्र देखने को मिलते हैं, उतने अन्य तथाकथित आंचलिक उपन्यासों में नहीं। इन दोनों उपन्यासों में ग्रामांचल की छोटी–छोटी घटनाओ, कथाओं, आचार–विचार, रीति–नीति, राजनीतिक व नैतिक अवधारणाओं, पारस्परिक संबंधों आदि के वि"लेष्ट चित्र मिलते हैं, तो पूरे अंचल के संदर्भ में सं"लेष्ट और गत्यात्मक हो गये हैं''[9]

आंचलिकता का समावे"ा करने वाले प्रमुख उपन्यासकारों में फणी"वरनाथ 'रेणु' (मैला आँचल, परती परिकथा) वृंदावनलाल वर्मा (मृगनयनी, अमरबेल, आदि), देवेंद्र सत्यार्थी (ब्रह्मपुत्र), अमृतलाल नागर (बूंद और समुद्र), भैरव प्रसाद गुप्त (गंगा मैया, सतीमैया के चौरा), रांगये राधव (कब तक पुकारूँ), शैले"ा मटियानी (एक मूठ सरसों), श्रीलाल शुक्ल (राग दरबारी), राही मासूम रजा (आधा गाँव), शानी ("ाांल वनों का द्वीप) आदि प्रमुख हैं।

समयगत प्रयोग

हिंदी म समय संबंधी प्रयोग भी हुए हैं। इस दृष्टि से 24 घंटों की कथा प्रस्तुत करने वाले दो उपन्यास मिलते हैं। गिरिधर गोपाल का 'चाँदनी रात के खंडहर' और नरे"ा मेहता का 'डूबते मस्तूल' इस प्रकार के

उपन्यास है। केवल बारह घंटों पर आधारित एक लघु उपन्यास श्री सर्वे"वर दयाल सक्सेना का 'सोया हुआ जल' मिलता है। ''गिरिधर गोपाल ने 'चाँदनी रात के खंडहर' में चौबीस घंटों की ज़िंदगी का वि"लेषण किया है। इसमें पांच वर्षों के बाद लंदन से ि"क्षा ग्रहण करके लौटे हुए नायक मध्यवर्गीय परिवार की खोखली आर्थिक स्थिति का मामिक चित्र खींचा गया है, जिसके लिए नायक वसंत खुद ज़िम्मेदार है। चौबीस घंटे की कालावधि के कारण इसमें चुनी हुई परिस्थितियों, घटनाओं और मनोद"ाओं पर तीव्र प्रका"ा डालकर उन्हें प्रभाव"ाली बनाने में सुविधा हुई है।''[10]

नरे"ा मेहता का 'डूबते मस्तूल' उपन्यास का समय 24 घंटे का है। इसमें उपन्यास की नायिका रंजना एक अजनबी से, जिसे वह अपना प्रेमी अकलंक समझती है अपने जीवन की सारी कथा 14–15 घंटे दिन–रात जागकर सुनाती है, समय संबंधी प्रयोग इसलिए कहा जा सकता है कि अकलंक और रंजना दोनों में 24 घंटे के लिए मिलत हैं, और रंजना अपने जीवन के कटु यथार्थ अकलंक को सुनाती है। नारी के साथ समाज जिस प्रकार का व्यवहार करता आया हैं उसका नग्न और यथार्थ चित्र उपन्यास में दिखाया गया हैं।

सव"वर दयाल सक्सेना का 'सोया हुआ जल' एक अलग प्रकार का उपन्यास है। इसमें यात्री"ाला की एक रात्रि का केवल 12 घंटों के बीच की कथा का वर्णन है। इसमें विभिन्न पात्रों की मनः स्थितियों का आंतरिक और बाह्य वि"लेषण सांकेतिक और प्रतीकात्मक ढंग से किया गया है। बूढ़ा बीमार पहरेदार यात्री"ाला में पहरा दे रहा है। वह यात्री"ाला के विभिन्न कमरों से और पास के ताल से कुछ स्फुट चर्चाएँ सुनता है उसे उसी शीर्षक के अंतर्गत लिखा गया है। जब सवेरा होता है, बूढ़ा मर जाता है। किंतु उस बूढ़े की आत्मा ने जो कुछ अवलोकन किया उसका यथार्थ चित्र उपन्यास मे दिखाया गया है। दिन निकलने के बाद उपन्यास समाप्त हो जाता है। ''यह चेतनाप्रवाह–"ौली और सिनेरियो टेकनीक में लिखा गया प्रतीकात्मक उपन्यास ह।''[11]

सहयोगी लेखनगत प्रयोग

हिंदी में सहयोगी उपन्यास भी लिखे गए हैं। 'एक इंच मुस्कान' राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी द्वारा लिखा गया उपन्यास है। सहलेखन के रूप में हिंदी का पहला सफल और कलात्मक प्रयोग है। इस उपन्यास में स्त्री–पात्र मन्नू भंडारी ने पुरुष–पात्र राजेंद्र यादव ने संभालते हुए विवाह के उपरांत स्त्री–पुरुष तथा प्रेमिका के मनःस्थिति का चित्रण किया है। इसमें कथाकार पात्रों के अनुरूप चलता है। इस उपन्यास में कथाकार ने अमर, अमला और रंजना के अंतर्द्वदं, आंतरिक हलचल, छटपटाहट, अकेलापन का चित्रण किया है। आखिर में अमला और रंजना के चले जाने के बाद अमर स्मृतियों के खंडहर में भटकता दिखाई देता है और यही उपन्यास समाप्त हो जाता है।

'ग्यारह सपनों का दे"ा' हिंदी उपन्यास साहित्य में सर्वथा नया पयोग है। यह दस लेखकों द्वारा लिखा गया सहयोगी उपन्यास है। यह ग्यारह परिच्छेदों में विभक्त है तथा सभी परिच्छेदों के अलग–अलग शीर्षक हैं। आरंभ तथा अन्त संपादक धर्मवीर भारती लिखित है। बाकी क्रम"ाः सर्वश्री, उदय"ांकर भट्ट, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर, इलाचन्द्र जा"ाी, राजेन्द्र यादव, मुद्रा राक्षस, लक्ष्मीचन्द्र जैन, प्रभाकर माचवे और कृष्णा सोबती ने लिखे हैं। सभी लेखकों ने पात्रों को भिन्न–भिन्न व्यक्तियों के रूप में ढाला है। विभिन्न शैलियों के समन्वय से कथा का विकास हुआ हैं। मुख्य रूप से पत्रात्मक शैली, पोस्टर **शैली, डायरी शैली, फ्लैश बैक, नोट बुक पद्धति आदि का** सफल प्रयोग हुआ हैं।

चरित्रगत प्रयोग

जीवन एक प्रयोग"ाला है। कथाकार के सम्मुख पात्र का एक समग्र जीवन उसकी आँखों में या मस्तिष्क में होना आव"यक है। किसी भी पात्र का चरित्र–चित्रण उपन्यास में उसी समय स"ाक्त हो सकता है, जब उसकी चारित्रिक वि"ोषताओं के संबंध में कथाकार का ज्ञान पूर्ण एवं निर्णयात्मक हो। इसके लिए कथाकार को विस्तृत अनुभव होना चाहिए।

आज व्यक्ति अपने बीच नहीं, अजनबियों के बीच भी रहता हैं ऐसे व्यक्तियों के बीच भी जिनकी भाषा, संस्कृति एवं नैतिक मान्यताएं उससे अलग हैं। अतः व्यक्ति का चरित्र इन अजनबियों के बीच कैसा होगा ? इस दृष्टि से आज के उपन्यासों में चरित्रों को नया मोड़ प्राप्त हो रहा हैं।

नए परिवे"ा में, नए सन्दर्भों में, नए वातावरण में एवं नए आलोक में पात्र अपने आप को प्रयोग की स्थिति में अनुभव कर रहा हैं। प्रयोगों के द्वारा हम सत्य के निकट पहुँचने का प्रयास करते हैं। बदलती हुई परिस्थितियों में मानवीय मूल्यों में अंतर हो गया है। ऐसी स्थिति में आज नए मूल्यों की खोज हो रही हैं। ये खोज प्रयोगात्मक रूप में ही है। इसलिए पात्रों का चरित्र–चित्रण भी कथाकार उसी रूप में कर रहे हैं।

राजेन्द्र यादव का उपन्यास '"ह और मात' भी पात्रों की दृष्टि से प्रयोगात्मक है। यह उपन्यास डायरी शैली में लिखा गया है। प्रमुख रूप से सुजाता की डायरी है, अंत में उदय की डायरी के भी कुछ पृष्ठ हैं। पहले राजेंद्र यादव की डायरी के भी कछ पृष्ठ हैं। डायरी में व्यक्ति का व्यक्तिगत जीवन होता हैं। पात्रों के व्यक्तित्व को समझाने के लिए, उसके चरित्र को जानने के लिए डायरी सहायक होती हैं। उपन्यास में दोनों ही पात्र 'सुजाता' एवं 'उदय' लेखिका एवं लेखक हैं। दोनों ही एक दूसरे के व्यक्तित्व को जानने के लिए पयत्न"ाील हैं। दोनों पर यह बात उजागर नहीं होती कि वे एक दूसरे का अध्ययन कर रहे हैं। यहाँ पात्रों का चरित्र–चित्रण प्रयोगात्मक रूप में हैं। दोनों ही पात्र एक दूसरे को अपने अध्ययन का आधार बनाकर प्रयोग कर रहे हैं।

निर्मल वर्मा का 'वे दिन' उपन्यास में अजनबियों के बीच गुजारा हुआ जीवन चित्रित हैं। एक भारतीय विद्यार्थी प्राग के हास्टल में रहता हैं। क्रिसमस की छुट्टियों में उसे वहाँ की टूरिस्ट एजेंसी से दुभाषिए का काम मिलता हैं। आस्ट्रीया की एक महिला को जो जर्मन एवं अंग्रेजी जानती हैं, प्राग में घूमते समय चेक एवं अंग्रेजी भाषा जानने वाले की आव"यकता होती हैं। यही काम कथानायक करता हैं। वह तीन दिन तक उसके साथ गाइड के रूप में दुभाषिए का कार्य करता हैं। इन तीन दिनों के अनुभव को जिसमें दोनों ही पात्र में चित्रित किया

हैं। दोनों पात्रों के चरित्र की सीधी एवं स्पष्ट रेखाएं लेखक ने नहीं खिंची है और उसका खींचना भी संगत न होता क्योंकि दोनों ही पात्र प्रयोगावस्था में है, एक–दूसरे को समझने की दृष्टि से।

आधुनिक उपन्यासों के नायकों के चरित्र का अध्ययन करें तो उनमें प्रायः नायक अलगाव की समस्या से जूझते हुए दिखाए गए हैं। अलगाव को यह समस्या अत्याधुनिक नहीं है किंतु उपन्यास जैसे–जैसे आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं, वैसे–वैसे यह समस्या व्यापक रूप में कथानायकों में अभिव्यक्त होती दिखाई दे रही हैं। यहाँ तक कि उपन्यासों के नामकरण पर भी थोड़ी गहराई से विचार करे तो यह बात अपने आप साफ हो जाएगी। जैसेः– 'अंधेरे बंद कमरे' (मोहन राके"ा), 'दो एकांत' (नरे"ा मेहता), 'अपने–अपने अजनबी' (अज्ञेय), 'एक कटी हुई जिंदगीःएक कटा हुआ कागज' (लक्ष्मीकांत वर्मा), 'उखड़े हुए लोग' (राजेंद्र यादव) आदि। जैसे इनका नामकरण हुआ है, वैसा ही जीवन उपन्यासों में चित्रित हुआ हैं। प्रस्तुत में कथानक जिस समस्याओं से बचना चाहते हैं, उन्हीं समस्याओं से उन्हें जूझना पड़ता हैं और टूटना पड़ता है, और सबसे बढ़कर संदर्भहीन होना पड़ता हैं।

'अंधेरे बंद कमरे' में यह दिखाया गया है कि व्यक्ति का 'स्व' अंधेरे बंद कमरों में है। प्रका"ा में व्यक्ति का 'स्व' दिखाई नहीं देता। अपने 'स्व' को प्रका"ा में लाना सामाजिक रूप देना कितना कठिन हैं ? इसी पीड़ा से उपन्यास के प्रमुख पात्र पीड़ित हैं। वे अलगाव की समस्या से ग्रस्त हैं।

'दो एकांत' की समस्या इसी कोटि की होती हुई अंतर इस बात में है कि मनुष्य का 'स्व' स्वयं मनुष्य के हाथ में नही है। वह स्थिति के अधीन हैं। इस स्थिति पर व"ा पाना कठिन हैं। इसीलिए व्यक्ति को एकांत जीवन जीना पड़ता हैं। इसी पीड़ा से पात्र पीड़ित रहते हैं।

'अपने–अपने अजनबी' उपन्यास में व्यक्ति अपने 'स्व' की रक्षा में समाज से कटकर रहना चाहता ह किंतु व्यक्ति को यह स्वतंत्रता कहाँ हैं कि समाज से कटकर जीवित रहा जाए ? अपने से बचने पर अजनबी से सामना करना पड़ता हैं। 'स्व' की रक्षा यहाँ भी संभव नहीं हैं। बुढ़िया इसी से पीड़ित हैं कि यहाँ भी भगवान ने एक अजनबी भेज दिया। इसलिए अपनों को अजनबी बनाने में अजनबियों को अपना बनाना पड़ता हैं।

'एक कटी हुई जिंदगीः एक कटा हुआ कागज' तथा 'उखड़े हुए लोग' आदि उपन्यासों में भी यह समस्या विभिन्न रूपों में व्यक्त हुई हैं।

निष्कर्ष

अतः इस प्रकार हम देखते है कि हिंदी उपन्यासों में विभिन्न प्रकार के प्रयोग हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी विधाएँ : स्वरूपात्मक अध्ययन–डॉ0 बैजनाथ सिंहल, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्ड़ीगढ़, प्रथम संस्करण 1988, पृ0 सं0 113,114।
2. नए उपन्यासों में नया प्रयोग – डॉ0 दंगल झाल्टे, पृ0 सं0 7।
3. हिन्दी उपन्यास का विकास – मधुरे"ा, सुमित प्रका"ान, इलाहाबाद, पंचम संस्करण 2011, पृ0 सं0 70।
4. शेखरः एक जीवनी पर व्याख्यान, – डॉ0 ब्रजे"ा श्रीवास्तव, पृ0 सं0 97।
5. प्रयोगधर्मी उपन्यास और देवे"ा ठाकुर – डॉ0 कमल चौरसिया, पृ0 सं0 30।
6. हिन्दी उपन्यास ि"ाल्प और प्रयोग – डॉ0 त्रिभुवन सिंह, पृ0 सं0 242।
7. हिन्दी उपन्यास का विकास – मधुरे"ा, सुमित प्रका"ान, इलाहाबाद, पंचम संस्करण 2011, पृ0 सं0 91।
8. हिन्दी उपन्यास विकास के चरण – डॉ0 राजकमल बोरा, पृ0 सं0 29।
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास – संपादक डॉ0 नगेन्द्र सह संपादक डॉ0 हरदयाल, मयूर पेपरबैक्स, पैंतालीसवां पुनर्मुद्रण संस्करण 2013, पृ0 सं0 697।
10. वही, पृ0 सं0 700।
11. वही, पृ0 सं0 700।